International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(3): 117-119

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(3): 117-119
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 07-03-2019
Accepted: 09-04-2019

डॉ. मोना बाला
एम.ए.(संस्कृत), पी–एच.डी सहायक प्रध्यापक, (गेस्ट फैकल्टी), स्नातकोत्तर विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

Correspondence
डॉ. मोना बाला
एम.ए.(संस्कृत), पी–एच.डी सहायक प्रध्यापक, (गेस्ट फैकल्टी), स्नातकोत्तर विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

कृष्ण आधृत भारतीय साहित्य

डॉ. मोना बाला

प्रस्तावना

भारतीय साहित्य में कृष्ण से संबंधित अनेकों काव्य रचे गये। भारतीय जनमानस में श्रीकृष्ण के प्रति अगाध प्रेम एवं समर्पण की भावना रही है। इसी कारण श्रीकृष्ण को समर्पित एवं सम्बन्धित काव्य का प्रभाव सदैव अक्षुण्ण रहा।

वेद में 'विष्णु' को समर्पित ऋचाएँ उपलब्ध है, जिसमें विष्णु के द्वारा तीन पद से विशाल व्यवस्थित जगत को मापने वाला कृत वर्णित है।

प्र विष्णवे शुषमेतु मन्म गिरिक्षित उरूगायाय वृष्णे।
य इदं दीर्घं प्रयतं सधस्थमेको विममे त्रिभिरित्पदेभिः।।[1]

कृष्ण को परवर्ती साहित्य में विष्णु का अवतार माना है। महाभारत में कृष्ण योगेश्वर, तत्त्वज्ञ एवं परम नीतिविद् महापुरूष के रूप उपस्थित होते हैं। अर्जुन की जिज्ञासा शान्त करते हुए कृष्ण विराट पुरूष के रूप में उपस्थित होते हैं।

अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुत दर्शनम्।
अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम्।।[2]
दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम्।
सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम्।।[3]

पुराण काल में कृष्ण के ब्रह्म रूप की परिकल्पना पूरी हो गई थी। श्रीमद्भागवतपुराण सहित अन्य पुराणों में भी इस तथ्य को माना गया था। कृष्ण लीला का वर्णन जो पुराणों में प्राप्त होता है वह अत्यन्त मनोहारी है।

सर्वेषामपि वस्तूनां भावार्थो भवति स्थितः।
तस्यापि भगवान् कृष्णः किमतद् वस्तु रूप्यताम्।।[4]

श्रीमद्भागवतपुराण के कृष्ण षोडषकला–सम्पन्न भगवान का अपना परिपूर्ण रूप है–
एते चांशकलाः पुंस कृष्णस्तु भगवान् स्वयं।
श्रीकृष्ण को पूर्णावतार माना गया है। संस्कृत भाषा में कृष्ण भक्ति से सम्बन्धित काव्य श्रीमद्भागवतपुराण एवं जयदेवकृत गीतगोविन्दम् से प्रभावित एवं आधारित है।

कालक्रमानुसार कृष्ण कथा का भावपूर्ण वर्णन हरिवंशपुराण के विष्णु पर्व में हुआ है। इसमें कृष्ण के रूप–सौन्दर्य के अतिरिक्त बालजीवन यथा– पूतना वध, शकटासुर वध, कालियदमन, गोवर्धन धारण का विशद वर्णन प्राप्त होता है। 'पद्मपुराण' में श्रीकृष्ण के दिव्य सौन्दर्य, महात्म्य के साथ वृन्दावन, गोकुल, मथुरा एवं द्वारका आदि में उनके अत्यन्त मनोरम लीला का चित्रण किया गया है। पद्म पुराण के 73वें अध्याय में मर्त्यलोक में श्रीकृष्ण नामक अमृत रासायन के पान से कष्टो से निवृति बताई गई है।

श्री केशव क्लेशहरं वरेण्य मानन्दरूपंपरमार्थमेव।
नमामृत योषहरं तु राज्ञा आनीतमत्रैव पिबन्तु लोकाः।। [5]

श्रीमद्भागवतपुराण की रचना पद्मपुराण से पूर्व मानी गयी है इस कारण कृष्ण लीला का मनोरम एवं बाह्य आलेख निश्चित रूप से श्रीमद्भागवत पुराण के इर्द–गिर्द घूमता है। श्रीमद्भागवत पुराण में श्रीकृष्ण का योगेश्वर एवं रसिकेश्वर दोनों ही रूप का सुन्दर समायोजन किया गया है। कृष्ण की बाल लीलाएँ, चमत्कारपूर्ण कृत्य, शौर्य, नीतिनैपुण्य, दार्शनिक ज्ञान अपनी प्रतिष्ठा प्राप्त करता है इस ग्रन्थ में कृष्ण ब्रह्मत्व को प्राप्त कर चुके हैं यही कारण है कि भारतीय जनमानस के बीच श्रीमद्भागवतपुराण का महत्त्व उत्कृष्ट है। भारतीय भाषाओं में कृष्ण आधृत काव्यों की धरातल इसी श्रीमद्भागवतपुराण पर है। श्रीमद्भागवतपुराण में राधा का वर्णन नहीं है लेकिन 'ब्रह्मवैवर्त पुराण में राधा सहित कृष्ण की शृंगार लीला का वर्णन प्राप्त होता है। नारद पुराण के पूर्वभाग प्रथम पाद में श्रीकृष्ण की स्तुति की गयी है, यह स्तुति व्रत, उपवास के बाद कही गयी है–

पंचरात्रं निराहारो ह्यद्यप्रभृति केशव।
त्वदाज्ञया जगतस्वामिन् ममाभीष्टप्रदो भव।।[6]

पुराण ग्रन्थों के अलावा बल्लभाचार्य और निम्बार्क दोनों के ग्रन्थों में कृष्ण लीला का महत् वर्णन किया गया है।

गौड़ीय सम्प्रदाय के रूप गोस्वामी के प्रसिद्ध दो ग्रन्थ है– 1. भक्तिरससामृत सिंधु एवं 2. उज्ज्वल नीलमणि। जो कृष्ण भक्ति के मुख्य केन्द्र ग्रन्थ माने जा सकते हैं, इसमें कृष्ण भक्ति का सांगोपांग वर्णन प्राप्त हुआ है।

संस्कृत साहित्य में कृष्ण–राधा के उत्कृष्ट प्रेम से सम्बन्धित ग्रन्थ है। जयदेव कृत 'गीतगोविन्दम्' है, जिसमें कृष्ण राधा की युगल छवि का वर्णन कवित्व एवं संगीत के अपूर्व मिश्रण के साथ होता है। जयदेव ने गीतगोविन्दम् में कृष्ण के विषय में कहा है–

अमलकमलदललोचन भवमोचन् ए।
त्रिभुवनभवननिधान जय जय देव हरे।।[7]

कृष्ण एवं राधा के इस वर्णन का प्रभाव ब्रह्मवैवर्त पुराण से गीतगोविन्दम् में गया अथवा गीतगोविन्दम् ने इस पुराण पर अपना प्रभाव छोड़ा। डॉ. नगेन्द्र इसको लेकर संशय की स्थिति में दिखते हैं। सातवाहन राजा हाल ने अपनी 'माहासत्तसई में एवं संस्कृत के प्रसिद्ध नाट्यकार भास ने अपनी रचना उरूभंग एवं दूतकाव्य में श्रीकृष्ण का अत्यंत सुन्दर वर्णन किया है। गाहासत्तसई में कृष्ण के शृंगार एवं बाल लीला वर्णित है वही भास के दूतकाव्य कृष्ण का नीतिज्ञ रूप आलोकित होता है।

संस्कृत काव्यों में कृष्ण की जीवन लीला पर आश्रित स्तोत्र काव्य श्रीकृष्णकर्णामृत है, इसके रचयिता मलावार निवासी कवि विल्वमंगल थे, जिन्हें लीलांशुक के नाम से भी जाना जाता था, इस कृष्णकर्णामृत को कृष्णलीलामृत के नाम से भी जाना जाता है। इसमें 110 कृष्ण स्तुति परक पद हैं, जो अत्यन्त सरल एवं मधुर हैं। यह द्वादश शतक की रचना है।[8] बोपदेव कृत हरिलीला का विशेष स्थल है, इसमें कृष्ण से जुड़ी शृंगारपरक सरस प्रसंगों का वर्णन प्राप्त होता है।

संस्कृत साहित्य में महाभारत एवं श्रीमद्भागवतपुराण से प्रभावित परवर्ती साहित्य में श्रीकृष्ण की सभी आयाम वाली छवि प्रस्तुत की। संस्कृत साहित्य के चम्पू विधा में रचित भागवत चम्पू स्मरणीय ग्रन्थ है। इसमें छः स्तवक हैं। यह भागवत पुराण पर आधृत हैं। इसकी रचना 11वीं शती के आस–पास मानी जाती है।[8] इस काव्य में राधा को स्वीया नायिका मान कृष्ण से विवाह वर्णित है। इस काव्य में राधा–कृष्ण के संयोग शृंगार कहीं कहीं पर जयदेव के गीतगोविन्दम् से बढ़कर चित्रित है।

कृष्णकाव्यों की रचना में एक तरफ महाभारत एवं महाभारत के अंश गीता का तो दूसरी ओर भागवतपुराण, ब्रह्मवैवर्तपुराण एवं गीतगोविन्द का प्रमुख स्थान है इन्हीं ग्रन्थों से निकले काव्य रस को मूल मानकर कृष्ण आधृत रचनाएँ हुई।

भारतीय प्रादेशिक भाषाओं में हुई रचनाएँ निश्चित रूप से कृष्ण आधृत साहित्य की शोभा को बढाने वाली रही है। कृष्णभक्ति से ओत–प्रोत रचना तमिल भाषा में हुई। तमिल भाषा में अलवर सन्तों की प्रसिद्ध संग्रह 'नालायिर दिव्यप्रबंधम्' में मिलता है। इसका रचना काल छठी शताब्दी के आस–पास है। लेकिन आचार्य बलदेव उपाध्याय वैष्णव संत अलवारों को नवम शताब्दी का बताते हैं। [9] इस रचना के रचनाकार 12 अलवार सन्त हैं। यह 4000 छन्द का संग्रह काव्य है। इसमें सर्वाधिक छन्द तिरूमंगै अलवार के हैं। इसमें भावनात्मक रचना हेतु कवयित्री आंडाल का स्थान सुरक्षित है। इस रचना में विष्णु के विविध अवतारों की चर्चा की गई है। अलवार भक्तों की रचना मथुरा–भक्ति का सामीप्य रखती है।

कन्नड़ भाषा में भी कृष्ण भक्ति की रचना हुई। कन्नड़ के दासकूट वर्ग के कवियों ने लगभग एक हजार वर्ष पूर्व ही कृष्ण–काव्य की रचना आरम्भ कर दी। नवी शताब्दी में आविर्भूत अचलानंद के कुछ पद प्राप्त होते हैं। बारहवीं शताब्दी में रूद्रभट्ट कवि द्वारा विरचित 'जगन्नाथ विजय' नामक चम्पू काव्य प्राप्त होता है। इस काव्य में कृष्ण की बाल लीलाओं का मनोहारी वर्णन प्राप्त होता है। तेरहवीं शताब्दी में कुमार व्यास ने अपने महाकाव्य 'भारत' में कृष्ण के विराट चरित्र का वर्णन प्रस्तुत किया है।

तेलगू भाषा में पोतना के द्वारा 'भागवतम्' की रचना की गई है। यह मूल रूप से संस्कृत के श्रीमद्भागवतपुराण का अनुवाद है लेकिन इसमें पोतना की काव्य प्रतिभा का चमत्कार दृष्टिगत होता है। भागवतम् का 'रूक्मिणी कल्याणम्' प्रकरण आन्ध्र प्रदेश में अत्यन्त लोकप्रिय है।

मलयालम में श्रीकृष्ण काव्य की मौलिक परम्परा वहाँ के लोकगीतों में विद्यमान है लेकिन सर्वप्रथम ग्रन्थ के रूप में चेरूश्शेरि द्वारा रचित कृष्ण गाथा है, जिसमें श्रीकृष्ण के सम्पूर्ण जीवन की कथा है, जन्म से लेकर स्वर्गारोहन तक वर्णित है। इस कथा मूल आधार श्रीमद्भागवत पुराण है। इसमें 47 कथाएँ रची गई हैं। कवि ने हरेक लीला का वर्णन अत्यन्त मनोयोग से किया है। इसके अलावा भासभागवतम्, हरिनामकीर्तनम् तथा कृष्णनादूटम् का सृजन हुआ जिन्होंने साहित्य की श्रीवृद्धि की। दक्षिण भारत में श्रीकृष्ण काव्य की भरमार नहीं है।

भारत वर्ष का मध्य–पश्चिमी भाग में मुख्यतः गुजराती एवं मराठी भाषाओं का प्रार्दुभाव है। मराठी में भास्कराचार्य ने शिशुपालवध की रचना की। यह रचना 13वीं शती उत्तरार्ध की है। इस काव्य की नायिका रूक्मिणी है, इसमें कृष्ण–रूक्मिणी की युगल मनोहारी वर्णन प्रस्तुत किया गया है। दामोदर पण्डित ने वत्सहरण एवं कवयित्री महदंबा ने भक्ति से आर्द्र 'धवले' एवं रूक्मिणी–स्वयम्वर की रचना की। मराठी में ज्ञानदेव और तुकाराम ने कृष्ण लीला गान के साथ ही गीता दर्शन का भी प्रचार किया।

गुजरात में कवि मालण द्वारा 'दशमहकंध' की रचना की गई। इसकी रचना 15वीं शती के उत्तरार्ध में हुई इस काव्य में श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का अत्यन्त सुन्दर वर्णन प्रस्तुत होता है। इस काव्य में पाँच पद ब्रजभाषा के भी प्राप्त होते हैं। नरसी मेहता, नाकर, विष्णुदास, प्रेमनन्द ने भी कृष्ण काव्य में श्रीवृद्धि की।

बंगला भाषा में चैतन्य महाप्रभु कृष्ण भक्ति के केन्द्र बिन्दु रहे हैं। चण्डीदास द्वारा कृष्ण कीर्तन में कृष्ण–राधा की लीलाओं का वर्णन किया गया है। चण्डीदास की शैली में एक साथ अभिजात एवं ग्रामीण दोनों से मिली रचना प्राप्त होती है। कृष्ण भक्ति में सदैव चैतन्य मत का प्रभाव दृष्टिगोचर होता रहा, चैतन्य मत के कवियों दो भागों में बाँट कर रचनाएँ की– 1.रीति काव्य एवं 2. चरित काव्य। चैतन्य के समसामयिकी कवियों में मुरारिगुप्त, नरहरि सरकार, बासुदेव घोष और रामानन्द बसु का नाम उल्लेखनीय है। इसके अलावा भी बंगला में वैष्णव साहित्य का प्रभाव बढ़ता रहा। ज्ञानदास, गोविन्ददास, बलरामदास और राय शेखर ने अपनी कविता में उच्च कोटि की रचना की।

उड़िया में भी कृष्ण काव्य की धारा प्रवाहित होती रही उड़िया कवि सारलादास ने महाभारत की रचना की। इसमें उन्होंने लिखा कि द्वारका के अवासान के बाद भगवान कृष्ण उत्कल प्रदेश में जगन्नाथ रूप प्रकट हुए। नित्य जगन्नाथ को ही नित्य कृष्ण माना गया। उड़िया कवियों ने कृष्ण एवं जगन्नाथ में एकत्व को नए आयाम दीए। उड़िया में कृष्णभक्ति शाखा में दीनकृष्णदास, अभिमन्यु सामन्त सिहर, बलदेव, भक्तचरण एवं गोपालकृष्ण की रचनाओं का प्रमुख स्थान रहा है। इन कवियों ने कृष्ण के संयोग एवं वियोग दोनों ही लीलाओं का वर्णन किया है।

असमिया साहित्य में कृष्णभक्ति शंकरदेव एवं उनके शिष्य माधवदेव द्वारा मुख्यतः प्रचारित की गई है। इनके रचनाकाल 15वीं के अन्तिम चरण से लेकर 16वीं शती तक व्याप्त था। [10] शंकरदेव ने 'कीर्तनघोष' नामक रचना की। माधवदेव ने 'नामघोषा' की रचना की।इन रचनाओं विनय, आत्मोपदेश एवं कृष्ण लीला के प्रति अमोघ सौन्दर्य है। इसमें वर्णित बाल लीला को ब्रजभाषा में रचित बाल लीलाओं के समकक्ष माना जाता है। दोनों कवियों ने काव्यों और नाटकों की रचना की। शंकरदेव ने रूक्मिणी हरण, महाभागवत आदि तथा माधवदेव ने राजसूय, देवजित् की रचना की।इन काव्यों की विशेषता यह है कि ये कृष्ण को समर्पित है, परन्तु इसमें निर्गुण की प्रधानता है। आसमिया साहित्य में कृष्ण के साथ रूक्मिणी है परन्तु राधा का वर्णन नहीं है।

पंजाबी में कृष्ण भक्ति की धारा गुरूगोविन्दसाहिब, जो सिखो का धर्म ग्रन्थ है, में सूरदास के पदों को स्थान मिला है। गुरूग्रन्थसाहिब के समकालीन ग्रन्थों में भी कृष्ण भक्ति के प्रसिद्ध प्रसंग उपलब्ध होते हैं। गुरूवाणी निर्गुण ब्रह्म के प्रति भक्ति है इस कारण कृष्ण की क्रियाकलापों का वर्णन नहीं है। कृष्ण अवतारी छवि का वर्णन भी पंजाबी में है। गुरू अर्जुनदेव के भतीजे सोढी मिहिरबान ने 'कृष्णचन्दर' की रचना की। इस ग्रन्थ में गद्य भाग की व्याख्या हरिजी ने की है पद्य भाग मिरिरबान के हैं। इसमें कृष्ण की समस्त लीलाएँ वर्णित हैं।

उर्दू में कृष्ण भक्ति से सम्बन्धित काव्य की रचना प्राप्त होती है। नजीर अकबरावादी, मोहसिन काकोरवी, हसरत मोहानी आदि ने कृष्ण से सम्बन्धित रचनाएँ की। कुछ हिन्दू लेखकों ने भी उर्दू में अपनी रचना की, जिनमें बनवारीलाल 'शोला', द्वारकानाथ 'उफक' प्रमुख हैं। नजीर की 'कृष्ण कन्हैया' अत्यन्त प्रसिद्ध रचना है। शोला की 'कृष्ण छब' में कृष्ण के मधुर जीवन की झांकी है।

सिन्धी में मुरली–माधुरी तो कश्मीरी में साहिब कौल की 'कृष्णावतार–लीला' और परमानन्द की राधा स्वयंवर एवं सुदामा चरित महत्त्वपूर्ण रचनाएँ मानी जाती हैं।

हिन्दी में कृष्णभक्ति काव्य की भरमार है। हिन्दी साहित्य को कई अपभ्रंश भाषाओं के मेल ने समृद्ध बनाया है। हिन्दी में सूरदास, मीरा, नामदेव, विद्यापति आदि रचनाएँ उपस्थित हैं। हालांकि इन कविओं ने खड़ी बोली में अपनी रचनाएँ नहीं की फिर भी इससे साहित्य की श्रीवृद्धि होती है। कृष्ण की मोहक छवि, उनकी नीतियों, बाल लीलाओं पर रामधारी सिंह 'दिनकर'', सुभ्रदा कुमारी चौहान, मैथिली शरण गुप्त आदि ने रचना की। 'दिनकर' जी की कविताओं के पात्र श्रीकृष्ण रहे है उनकी रचनाओं में कृष्ण का नीतिवान् रूप साक्षात् होता है।

कृष्ण भक्ति में सर्वाधिक रचनाएँ हुईं। कृष्ण भक्ति की आत्मा में बसे हैं, उनकी सभी छवि अपनी मोहकता प्रकट करने वाली थी। प्रत्येक भाषा के कवि ने अपनी सक्षमता एवं भक्ति से ओत–प्रोत हो रचनाएँ की, जो जन मानस में सर्वाधिक प्रसिद्ध हुई। कृष्ण की लीलाओं पर भाषायी संकीर्णता अल्प हुई वहीं धर्म–जाति के भेद का भी नाश हुआ। कृष्ण भक्ति सब पर अपना चमत्कार करने में सक्षम रही है। कृष्ण भक्ति सर्वग्राह्य है।

संदर्भित पुस्तक

1. श्रीमद्भागवतपुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर
2. श्रीमद्भगवद्गीता, गीता प्रेस, गोरखपुर
3. ऋग्वेद सहिता, ब्रह्मवर्चस् शान्तिकु×ज, हरिद्वार
4. महाभारत, गीता प्रेस, गोरखपुर
5. संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास– डा. बाबूराम त्रिपाठी, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
6. संस्कृत साहित्य का इतिहास– आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी
7. भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास– डॉ. नगेन्द्र, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय
8. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास– डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, रामनारायणलाल विजयकुमार, इलाहाबाद
9. पुराणों में क्या है– पंकज दीक्षित, पुस्तक महल, दिल्ली

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ऋग्वेद.– 1/154/3
2. श्रीमद्भगवद्गीता– 11/10
3. श्रीमद्भगवद्गीता– 11/11
4. श्रीमद्भागवतपुराण– 10/14/57
5. पद्म पुराण– 2/73/10
6. नारद पुराण(पूर्व भाग)– 1/21/10
7. गीतगोविन्दम्– 1/2/5
8. संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास– डा. बाबूराम त्रिपाठी, पृ.–130
9. संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास– डॉ. बाबूराम त्रिपाठी, पृ.–268
10. संस्कृत साहित्य का इतिहास– आचार्य बलदेव उपाध्याय, पृ. –88
11. भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास– डॉ. नगेन्द्र, पृ.–257